The Hindu plus Summary : 30.03.2024

मेन्स मास्टर

भारत के साथ 'शांति फार्मूले' पर चर्चा हुई: यूक्रेन के विदेश मंत्री

संदर्भ
• यूक्रेन के विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा ने रूस के साथ चल रहे संघर्ष को समाप्त करने के लिए शांति पहल के लिए समर्थन मांगने के लिए भारत का दौरा किया।
• भारत ने यूक्रेन और रूस दोनों के साथ संबंध बनाए रखते हुए रूसी कार्रवाइयों की प्रत्यक्ष निंदा से परहेज किया है।

पृष्ठभूमि
• कुलेबा और भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कुलेबा की यात्रा के दौरान 'शांति सूत्र' पर चर्चा की।
• भारत का रूस और यूक्रेन दोनों के साथ कूटनीतिक तटस्थता और अच्छे संबंधों का इतिहास रहा है।

स्विट्जरलैंड का प्रस्ताव
• रूस और यूक्रेन के बीच शांति वार्ता को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से स्विट्जरलैंड एक 'वैश्विक शांति शिखर सम्मेलन' आयोजित कर रहा है।
• यह स्पष्ट नहीं है कि स्विट्जरलैंड की योजना यूक्रेन के शांति सूत्र और रूस की स्थिति के बीच विसंगतियों को कैसे संबोधित करती है।

रूस का रुख
• रूस ने स्विट्जरलैंड के नेतृत्व वाली शांति वार्ता की योजनाओं को खारिज कर दिया है।
• मास्को का कहना है कि वह ऐसी चर्चाओं में भाग नहीं लेगा जो उसकी अपनी सुरक्षा चिंताओं को ध्यान में नहीं रखती हैं।

संभावित मध्यस्थ के रूप में भारत
• **संभावित लाभ:** भारत का गुटनिरपेक्ष रुख और दोनों पक्षों के साथ ऐतिहासिक संबंध इसे एक स्वीकार्य मध्यस्थ बना सकते हैं।
• **चुनौतियाँ:** रक्षा उपकरणों के लिए रूस पर भारत की निर्भरता और रूस की खुले तौर पर आलोचना करने में उसकी अनिच्छा, वास्तव में तटस्थ मध्यस्थ के रूप में कार्य करने की उसकी क्षमता में बाधा डाल सकती है।

महत्वपूर्ण दृष्टिकोण
निम्नलिखित कारकों के कारण शांति योजना की सफलता की संभावनाओं का आकलन करना मुश्किल है:
• **अस्पष्ट विवरण:** यूक्रेनी शांति सूत्र और स्विट्जरलैंड की शांति शिखर सम्मेलन योजना की विशिष्टताएँ कुछ हद तक अपरिभाषित हैं।
• **कठोर स्थिति:** रूस और यूक्रेन दोनों ही अड़ियल स्थिति में हैं, जिससे समझौता करना मुश्किल हो जाता है।
• **भारत का रुख:** क्या भारत एक प्रेरक मध्यस्थ होने के लिए पर्याप्त तटस्थता बनाए रख सकता है, यह एक खुला प्रश्न है।

बांड, बड़ा धन और अपूर्ण लोकतंत्र

संदर्भ
• भारत राजनीतिक अभियानों को निधि देने और नीति को प्रभावित करने के लिए भारी मात्रा में अवैध धन ("काला धन") के उपयोग से जूझ रहा है।
• यह लोकतंत्र को नष्ट करता है क्योंकि निर्वाचित अधिकारी आम नागरिकों की ज़रूरतों को नहीं, बल्कि धनी दानदाताओं को प्राथमिकता देते हैं।

पृष्ठभूमि
• राजनेताओं को चुनाव जीतने के लिए बड़ी रकम की आवश्यकता होती है क्योंकि:
  ◦ वोट अक्सर पहचान (जाति, धर्म, आदि) पर आधारित होते हैं, न कि नीतिगत पदों पर।
  ◦ पार्टियाँ मतदाताओं को रिश्वत देती हैं और पैसे, भोजन और उपकार के साथ भीड़ जुटाती हैं।
  ◦ भव्य अभियान आधिकारिक सीमाओं से कहीं ज़्यादा भारी खर्च की ज़रूरत पैदा करते हैं।

चुनाव फंडिंग से जुड़ी समस्याएँ
• सत्ता हासिल करने के लिए भारी मात्रा में अवैध नकदी का इस्तेमाल किया जाता है।

इससे ऐसी व्यवस्था बनती है जहाँ नीतियाँ आम लोगों को नहीं बल्कि धनी समर्थकों को लाभ पहुँचाती हैं, जिसके कारण:
  ◦ लगातार गरीबी, असमानता और अपर्याप्त सार्वजनिक सेवाएँ।
  ◦ अवैध रूप से लाभ कमाने वाले व्यवसाय, जिसके लिए अधिकारियों की मिलीभगत की आवश्यकता होती है।
  ◦ एक कमज़ोर लोकतंत्र जहाँ जवाबदेही कम है और नागरिक शक्तिहीन महसूस करते हैं।

चुनावी बांड
• "काले धन" के प्रभाव को समाप्त करने के समाधान के रूप में पेश किए गए, बांड पार्टियों को गुमनाम दान की अनुमति देते हैं।
• **आलोचना:**
  ◦ पारदर्शिता की कमी: मतदाताओं को पता नहीं होता कि राजनेताओं को कौन फंड करता है, जिससे मकसद अस्पष्ट हो जाता है।
  ◦ बढ़ी हुई कॉर्पोरेट शक्ति: विशाल संसाधनों वाले व्यवसाय अधिक आसानी से नीति में हेरफेर कर सकते हैं।
  ◦ अवैध फंडिंग को रोकने में विफल: नकद रिश्वत और अवैध वित्तपोषण जारी है।

भ्रष्टाचार को वैध बनाना
• डेटा नीतिगत पक्षपात या अभियोजन के खिलाफ सुरक्षा के रूप में जुड़े दान को प्रकट करता है।
• यह भाई-भतीजावाद को संस्थागत बनाता है, जहाँ व्यवसाय तरजीही व्यवहार के लिए भुगतान करते हैं, और विनियामक खतरों के माध्यम से व्यवसायों से जबरन वसूली सामान्य हो जाती है।

चुनावी बांड पर सुप्रीम कोर्ट
हालाँकि हाल ही में इसे असंवैधानिक घोषित किया गया है, लेकिन यह योजना निम्न को उजागर करती है:
  ◦ भारत की चुनावी प्रणाली में भ्रष्टाचार की गहराई।
  ◦ कैसे लोकतांत्रिक सिद्धांतों के बजाय पैसा तय कर सकता है कि कौन चुना जाएगा और कौन सी नीतियाँ लागू की जाएँगी।

निष्कर्ष
भारत को मूलभूत सुधारों की आवश्यकता है। चुनाव कम खर्चीले होने चाहिए और रिश्वत पर नहीं बल्कि मुद्दों पर केंद्रित होने चाहिए। जब तक जवाबदेही बहाल नहीं हो जाती, तब तक सभी नागरिकों के लाभ के लिए एक सच्चा लोकतंत्र दूर की कौड़ी लगता है।

अनुमान है कि 2050 तक TFR घटकर 1.29 हो जाएगा

संदर्भ
• आने वाले दशकों में भारत की आबादी तेज़ी से बूढ़ी होती जा रही है।
• ऐसा कुल प्रजनन दर (TFR) में गिरावट के कारण हो रहा है।

पृष्ठभूमि
• लैंसेट मेडिकल जर्नल और यूएन पॉपुलेशन फंड की रिपोर्ट भारत की बूढ़ी होती आबादी की सीमा को उजागर करती है।
• 2050 में, पाँच में से एक भारतीय 60 वर्ष से अधिक उम्र का होगा।
• भारत की TFR 2050 तक घटकर 1.29 हो जाने का अनुमान है, जो प्रतिस्थापन दर से काफी कम है।

लैंसेट की खोज
• भारत के पास अपने "जनसांख्यिकीय लाभांश" (बड़ी कामकाजी आयु वाली आबादी जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है) को अधिकतम करने का अवसर सीमित है।

मुख्य चिंताएँ
• कम उम्र की आबादी को सहारा देने के लिए कम युवा लोगों के साथ कार्यबल में कमी।
• स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर बढ़ता आर्थिक दबाव।
• बढ़ती बुजुर्ग आबादी की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए नीतिगत बदलावों की आवश्यकता है।

भारत के लिए तत्काल कदम
• उच्च गुणवत्ता वाला कार्यबल बनाने के लिए शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण में तत्काल निवेश।
• ज्ञान अर्थव्यवस्था में रोजगार पैदा करने और कम वेतन वाले क्षेत्रों से श्रमिकों को हटाने पर ध्यान केंद्रित करना।

आगे की राह
• बुजुर्गों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई मज़बूत स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ विकसित करना।
• वृद्ध नागरिकों के कौशल और अनुभवों का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए पहल करना।
• अलग-अलग भारतीय राज्यों में अलग-अलग नीतियों के साथ असमान उम्र बढ़ने की दर को संबोधित करना

केंद्र में अफ्रीका

संदर्भ
• **राष्ट्रपति मुर्मू की मॉरीशस यात्रा:** उद्घाटन की गई परियोजनाओं में संभवतः बुनियादी ढाँचा (आवास, सड़क, अस्पताल) या सामाजिक विकास (विद्यालय, सामुदायिक केंद्र) शामिल थे। फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला भारत के विशेषज्ञता हस्तांतरण को दर्शाती है और इसे क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग से जोड़ा जा सकता है। भारत चीन के प्रभाव की पृष्ठभूमि में प्रमुख भागीदारों के रूप में IOR देशों के साथ रणनीतिक रूप से संबंधों को मजबूत करता है।

• **ग्लोबल साउथ का समर्थन:** यह शब्द पुराने "थर्ड वर्ल्ड" को बदलने के लिए शीत युद्ध के बाद उभरा। यह एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में विकासशील देशों के बीच एकजुटता पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि निष्पक्ष व्यापार, जलवायु न्याय और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी संस्थाओं में अधिक आवाज़ उठाई जा सके।
पृष्ठभूमि

• **'ग्लोबल साउथ' के इर्द-गिर्द बहस:** आलोचकों का तर्क है कि यह शब्द ब्राज़ील से लेकर बुरुंडी तक बहुत अलग-अलग अर्थव्यवस्थाओं और चुनौतियों वाले देशों को एक साथ जोड़ता है। हालाँकि, यह वर्तमान विश्व व्यवस्था में शक्ति असंतुलन के साथ साझा कुंठाओं को उजागर करने में उपयोगी है।

• **भारत का नेतृत्व:** भारत अपने और एक अफ्रीकी देश के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीटों के विस्तार की वकालत करता है। जी20 में, यह विकासशील देशों के लिए तकनीकी पहुँच और वैक्सीन इक्विटी जैसे मुद्दों पर जोर देता है।

अफ्रीका क्यों महत्वपूर्ण है
• **जनसांख्यिकी डेटा से परे:** अफ्रीका के खनिज वैश्विक उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण हैं, यह भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक विशाल भविष्य के बाजार का प्रतिनिधित्व करता है, और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर इसकी स्थिति भारत के लिए कूटनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।
• **ऐतिहासिक बंधन:** भारत और कई अफ्रीकी देशों ने यूरोपीय उपनिवेशवाद के अनुभव को साझा किया और स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी। इन संघर्षों ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन और कई मुद्दों पर चल रही एकजुटता की नींव रखी।

भारत-अफ्रीका हितों का अभिसरण
• **आर्थिक भागीदारी:** भारतीय कंपनियाँ पूरे अफ्रीका में रेलवे, अस्पताल और दूरसंचार नेटवर्क बनाने में शामिल हैं। भारतीय गैर सरकारी संगठन ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सस्ती स्वास्थ्य सेवा, सौर ऊर्जा से चलने वाले समाधान और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
• **साझा प्रभाव:** भारत ने अफ्रीकी संघ को जी20 में पर्यवेक्षक का दर्जा दिलाने का समर्थन किया। दोनों क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय समझौतों में निष्पक्ष शर्तों के लिए जोर देते हैं, और सहयोग उनकी आवाज़ को बढ़ाता है।
• **सतत विकास:** अफ्रीका में कोबाल्ट, लिथियम और अन्य खनिज हैं जिनकी भारत को बैटरी और सौर ऊर्जा के लिए आवश्यकता है। भारत कृषि तकनीक, जल प्रबंधन और आईटी कौशल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है, जिसकी पूरे अफ्रीका में मांग है।

भारत एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में
• **ऐतिहासिक समर्थन:** भारत ने दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया जैसे देशों में उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों को वित्त पोषण, प्रशिक्षण और कूटनीतिक समर्थन प्रदान किया। स्वतंत्रता के बाद के युग में, भारत विकास सहायता का एक प्रमुख प्रदाता रहा है।
• **वैश्विक दक्षिण फोकस:** भारत का अपना विनिर्माण बनाने, तकनीक में निवेश करने और अपनी स्थितियों के लिए प्रासंगिक समाधान खोजने पर जोर कई अफ्रीकी नेताओं को पारंपरिक दाता-प्राप्तकर्ता मॉडल से बचने के लिए प्रेरित करता है।

चुनौतियाँ
• **जटिलता:** अफ्रीका में 54 बहुत ही विविध राष्ट्र शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक की विशिष्ट आर्थिक प्राथमिकताएँ और राजनीतिक गठबंधन हैं। भारत को अपने दृष्टिकोण को महाद्वीप के भीतर क्षेत्रीय खिलाड़ियों और व्यक्तिगत सरकारी प्राथमिकताओं के बीच संतुलन बनाते हुए ढालने की आवश्यकता है।
• **प्रतिस्पर्धा:** चीन ने बुनियादी ढाँचे की परियोजनाओं के साथ अफ्रीका में महत्वपूर्ण प्रगति की है। अमेरिका और यूरोप महाद्वीप पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। भारत का लाभ दक्षिण-दक्षिण ज्ञान-साझाकरण और आत्मनिर्भरता के आधार पर एक अलग साझेदारी मॉडल की पेशकश करने में निहित है।

आगे की राह
• **अफ्रीका को प्राथमिकता दें:** अधिक शिखर सम्मेलन, व्यापार प्रतिनिधिमंडल और अफ्रीकी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति से संबंध और गहरे होंगे। भारत की "अफ्रीका फर्स्ट" नीति तदर्थ जुड़ाव से दूर जाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
• **सफलता पर निर्माण:** पैन-अफ्रीकन ई-नेटवर्क (अफ्रीका भर में शैक्षणिक संस्थानों को उपग्रह के माध्यम से जोड़ना) जैसी परियोजना को एक मॉडल के रूप में उजागर करें कि भारत किस तरह से तकनीक-आधारित समाधान प्रदान करता है। इसी तरह की जीत का विस्तार करने से विश्वास अर्जित होगा।
• **गति बनाए रखें:** प्रतिस्पर्धा का मतलब है कि भारत को लगातार वादों को पूरा करने, साझेदारी से ठोस परिणाम दिखाने और लंबी अवधि के लिए अफ्रीकी देशों के लिए एक विश्वसनीय सहयोगी के रूप में देखा जाना चाहिए।

प्रीलिम्स बूस्टर

कुट्टनाड 'केरल का चावल का कटोरा'

🌾 कुट्टनाड की अनूठी भौगोलिक स्थिति:
कुट्टनाड, जिसे 'केरल का चावल का कटोरा' कहा जाता है, की विशेषता है कि यह झीलों, नदियों और अलाप्पुझा, कोट्टायम और पथानामथिट्टा जिलों में फैले विशाल धान के खेतों से जुड़ा हुआ है।
🌊 इंजीनियरिंग का कमाल:
बांध और बाँध: समुद्री जल को रोकने और खेतों की सुरक्षा के लिए मिट्टी के बाँधों का जटिल नेटवर्क, भूमि को प्रबंधनीय इकाइयों में विभाजित करता है।
स्लूस गेट: रणनीतिक रूप से रखे गए गेट खारे पानी के प्रवेश को रोकते हैं और विभिन्न मौसमों के दौरान जल स्तर का प्रबंधन करते हैं।
राजमार्ग के रूप में जलमार्ग: नहर प्रणाली सिंचाई चैनलों और प्राथमिक परिवहन मार्गों के रूप में कार्य करती है, जो एक अद्वितीय जलीय नेटवर्क बनाती है।
🌱कृषि तकनीक:
मौसमी समन्वय: मिट्टी की लवणता से निपटने के लिए कटाई के बाद बाढ़ के साथ मानसून के साथ संरेखित कृषि चक्र।
विशेष चावल की किस्में: समुद्र तल से नीचे की स्थितियों में पनपने के लिए नमक-सहिष्णु चावल की किस्मों का विकास।
जलीय कृषि एकीकरण: मछली और बत्तख पालन के लिए जल-समृद्ध वातावरण का उपयोग, कृषि के साथ-साथ एक आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना।
🌟लचीलापन और सरलता:
कुट्टनाड मानवीय लचीलापन और नवाचार का एक प्रमाण है, जो दर्शाता है कि कैसेकिसान न केवल जीवित रहते हैं बल्कि भौगोलिक बाधाओं को धता बताते हुए चुनौतीपूर्ण वातावरण में पनपते हैं।

वित्त वर्ष 2024 में जनवरी तक विदेश में एलआरएस हस्तांतरण रिकॉर्ड 27 बिलियन डॉलर पर पहुंच गया

💸 RBI की उदारीकृत प्रेषण योजना (LRS):
- दुनिया भर में घूमने वाले भारतीयों द्वारा LRS का उपयोग बढ़ गया है, अप्रैल 2023-जनवरी 2024 के दौरान $27.4 बिलियन का रिकॉर्ड-उच्च बहिर्वाह हुआ, जो पिछले वित्तीय वर्ष के $27.1 बिलियन के प्रेषण को पार कर गया।
🌍 उपयोग का विवरण:विदेश यात्रा: 54%, विदेशी शिक्षा: 11%
💸 प्रेषण सीमा:
LRS योजना निवासी व्यक्ति के लिए प्रति वित्तीय वर्ष अधिकतम 250,000 USD का बाहरी प्रेषण की अनुमति देती है, जो पूरे वर्ष में सभी स्वीकार्य लेनदेन के लिए संचयी रूप से लागू होता है।
📊 स्वीकार्य लेनदेन:
चालू खाता लेनदेन: निवासियों और गैर-निवासियों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान को शामिल करता है, जिसमें यात्रा, शिक्षा, चिकित्सा उपचार और विदेश में रिश्तेदारों के लिए सहायता जैसे खर्च शामिल हैं।
💸 पूंजी खाता लेनदेन: निवासियों और गैर-निवासियों के बीच परिसंपत्ति स्वामित्व का हस्तांतरण शामिल करें, जैसे विदेशी स्टॉक, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड और विदेश में संपत्ति खरीद में निवेश।

राजस्थान भारत में हरित ऊर्जा बदलाव में अग्रणी; गुजरात भी उसके पीछे

⚡ राजस्थान का अक्षय ऊर्जा नेतृत्व:
राजस्थान 26,800 मेगावाट से अधिक स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता के साथ भारत के हरित ऊर्जा संक्रमण में अग्रणी है, जो अक्षय स्रोतों से अपने बिजली उत्पादन का 64.5% योगदान देता है।
☀️ गुजरात की उभरती हुई छवि:
गुजरात का लक्ष्य अक्षय ऊर्जा में राजस्थान से आगे निकलना है, कच्छ में 30,000 मेगावाट के अक्षय ऊर्जा पार्क को चालू करने की योजना है, जिससे वह सौर ऊर्जा में खुद को शीर्ष खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर सकेगा।
🌿 अक्षय ऊर्जा उत्पादन:
राजस्थान ने 2023-24 के पहले 10 महीनों में 39,300 मिलियन यूनिट हरित ऊर्जा का उत्पादन किया, जो पिछले वर्षों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है। दूसरे सबसे बड़े उत्पादक गुजरात ने इसी अवधि के दौरान 36,184 मिलियन यूनिट का उत्पादन किया।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org